RNI 26281/74 रजि.नं. पी.बी./जे.एल.-011/2018-20

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 21 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 16 अगस्त, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 21, 13-16 अगस्त 2020 तदनुसार 1 भद्रपद, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

देव के अनुकूल सबका प्रयाण

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यस्य प्रयाणमन्वन्यऽइद्ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा।
यः पार्थिवानि विममे सऽएतशो रजाꣳसि देवः सविता महित्वना।।

-यजुः० ११।६

शब्दार्थ-यस्य = जिस **देवस्य** = देव के **प्रयाणम्+अनु** = प्रयाण के पीछे तथा **महिमानम्+अनु** = महिमा के कारण **अन्ये** = दूसरे **देवाः** = देव **ओजसा** = हठात् **ययुः+इत्** = चलते ही हैं। **यः** = जो **पार्थिवानि** = पार्थिव तथा अन्य **रजांसि** = लोकों को **वि+ममे** = विशेषरूप से बनाता है, **सः** = वह **सविता** = सर्वोत्पादक **देवः** = भगवान् **महित्वना** = महत्त्व के कारण **एतशः** = सबका गतिदाता है।

व्याख्या-इस मन्त्र में आत्मानुसन्धान का विशेष विधान है। **'देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा' (नि०)** = देने के कारण, प्रकाशमय होने के कारण अथवा प्रकाशक होने के कारण पदार्थ 'देव' होता है। आत्मा को वेदों में अनेक स्थानों में ज्योति कहा है। यथा-**'ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कम्' [ऋ० ६।९।५]** = दर्शन के लिए सुखकारी अविनाशी ज्योति [शरीर में] है, अतः निरुक्तनय से आत्मा देव है। मन और इन्द्रियों को यजुर्वेद [३४।१] में ज्योति कहा है-**'ज्योतिषां ज्योतिरेकम्'** = जो [मन] ज्योतियों में प्रधान ज्योति है, अतः मन तथा इन्द्रियाँ भी देव हैं। इस दृष्टि से मन्त्र का भाव हुआ-''आत्मदेव के प्रयाण के पीछे सभी देव चले जाते हैं, मानो इसने सब पार्थिव लोकों को माप रखा है और वही इनका गतिदाता है।''

जीवित तथा मृत शरीर के देखने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है। आत्मा के निकल जाने पर आँख, नाक, कान आदि सभी इन्द्रियाँ चली जाती हैं। अब आँख देखने का कार्य नहीं करती। कान सुनते नहीं, नाक सूँघती नहीं, रसना स्वाद नहीं लेती। स्पर्शन अब सर्दी-गर्मी का पता नहीं देती।

वास्तव में बात यह है कि ये सब हथियार हैं। आत्मा के बिना ये बेकार हैं। आत्मा ही इनका प्रयोक्ता है। रानी मक्खी के चल देने पर जैसे अन्य मधु मक्खियाँ उसके पीछे चल देती हैं, वैसे ही आत्मा के पीछे ये सब चल देते हैं।

संसार में कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता, किन्तु मरते सभी हैं। क्यों? प्रतीत होता है, कोई ऐसा बली है, जो बलात् आत्मा को देह से निकाल देता है। उस महादेव के प्रयाण=प्रेरणा के अनुकूल अन्य सूर्य-चन्द्र आदि चलते हैं।

भगवान् सभी लोक-लोकान्तरों का निर्माता है। केवल संसार बनाकर ही उसने छोड़ नहीं दिया, वरन् उसने ही इसमें गति डाली है। इस सबका कारण उसका महाबल है। सारांश यह कि यह सारा संसार भगवान् के विधान के अनुसार चल रहा है। वही इसका विधाता तथा गतिदाता है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः।
अभि विश्वानि काव्या।।

-उ० २.१.१

भावार्थ-हे शान्तिदायक शान्तस्वरूप परमात्मन्! आप अपनी कृपा से आपके प्यारे पुत्र जो हम हैं उनसे अनेक वेद के पवित्र मन्त्रों से की हुई प्रार्थना को सुन कर, हम पर प्रसन्न हुए हमें शान्त और पवित्र कीजिए और हमारी सदा रक्षा कीजिए।

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना।
उपब्रह्माणि न शृणु।।

-उ० १.१.६

भावार्थ-हे दयामय परमेश्वर! हम सबका जीव और मन जिनकी वृत्तियाँ ही केश के तुल्य हैं, ऐसे दोनों आपके ब्रह्मानन्द को प्राप्त होवें और हमारी यह भी प्रार्थना है कि, जब हम लोग वेद के पवित्र मन्त्रों को प्रेम से पढ़ें, तब आप कृपा करके स्वीकार करें। जैसे दयालु पिता अपने पुत्र की तोतली वाणी से की हुई प्रार्थना को सुन कर बड़ा प्रसन्न होता है, ऐसे ही परम प्यारे पिता जी! आप हमारी प्रार्थना को सुन कर परम प्रसन्न होवें।

त्वं समुद्रिया अपोग्रियो वाच ईरयन्।
पवस्व विश्वचर्षणे।।

-उ० २.१.२

भावार्थ-हे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् जगदीश! आप सबके पूज्य और सबके अग्रणी हैं। आप आकाश में स्थित बादलों के प्रेरक हैं। अपनी इच्छा से ही जहां-तहाँ वर्षा करते हैं। पवित्र वेदवाणी को आपने ही हमारे कल्याण के लिए प्रकट किया है। आप कृपा करें कि हम सब मनुष्यों के हृदय में उस वेदवाणी का प्रकाश हो। उसी में श्रद्धा हो, उसी से हमारा जीवन पवित्र हो।

पवमानस्य विश्ववित्र ते सर्गा सुसृक्षत।
सूर्यस्येव न रश्मयः।।

-उ० ३.२.२

भावार्थ-हे सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर! पवित्र करते हुए आपसे वेद की पवित्र ऋचाएँ प्रकट होती हैं, जो ऋचाएँ यथार्थ ज्ञान का उपदेश करती हुई मुक्तिधाम तक पहुँचाने वाली हैं। भगवन्! जैसे सूर्य से प्रकट हुई किरणें सारे संसार का अन्धकार दूर करती हुई सबका उपकार कर रही हैं, ऐसे ही महातेजस्वी प्रकाशस्वरूप आपसे वेद की ऋचारूपी किरणें प्रकट होकर, सब संसार का अज्ञान रूपी अन्धकार दूर करती हुई उपकार कर रही हैं। यह आपकी सर्व संसार पर बड़ी कृपा है।

गृहस्थ जीवन को स्वर्ग बनाओ–वेद

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटा, (राजस्थान)

वेद में वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था पर गहन विचार हुआ है। सम्पूर्ण समाज को चार श्रेणियों में बांट कर समाज की सर्वांगीण उन्नति की गति को बढ़ाने का एक निर्दोष मार्ग दर्शन किया गया है। समाज में वास्तव में चार प्रकार के मनुष्य ही पाये जाते हैं–बुद्धि जीवी मनुष्य वे हैं जो अध्यापक और उपदेशक के रूप में समाज का मार्ग दर्शन करते हैं। वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर्स आदि भी इस श्रेणी में स्थान पाते हैं। दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जो समाज में व्यवस्था स्थापित करने का कार्य करते हैं। यह लोग समाज में शारीरिक एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों की शारीरिक गठन में मजबूत, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न दुष्ट लोगों से रक्षा करते हैं। इस श्रेणी में पुलिस विभाग के कर्मचारी सिपाही आदि, सैनिक एवं न्यायालय में कार्यरत लोगों को सम्मिलित किया जा सकता है। तीसरी श्रेणी में वह वर्ग आता है जो कृषि के द्वारा समाज को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराता है तथा उसकी सुरक्षा करता है। कारखानों के द्वारा मनुष्य के जीवन के उपयोगी पदार्थों का निर्माण करता है तथा उन्हें संसार भर में पहुंचाता है। सभी कृषक, व्यापारी, आवागमन के साधन प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति इसी श्रेणी में स्थान प्राप्त करते हैं। चौथी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो इन तीनों श्रेणियों के लोगों में समन्वय स्थापित करते हैं। पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं। सम्पूर्ण देश को स्वच्छ बनाये रखना इनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। चारों वर्णों के अपने-अपने कर्त्तव्य निश्चित हैं। इनमें कोई भी किसी दूसरे से छोटा या बड़ा नहीं है। वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित होती है जन्म आधारित नहीं होती है। समाज के उत्थान के लिए इससे भिन्न कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

इसी प्रकार व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए आश्रम व्यवस्था से भिन्न कोई दूसरा मार्ग नहीं है। आश्रम व्यवस्था में मानव जीवन को 100 वर्ष का मान कर उसे भार भागों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक भाग को 25 वर्ष का समय दिया गया है। ये चार भाग हैं–ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम। जन्म से लेकर 25 वर्ष की आयु तक के काल का नाम ब्रह्मचर्य आश्रम है। इस काल में बालक को अपना शारीरिक गठन ठीक बनाने के साथ-साथ भावी जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यक विद्या प्राप्त करनी होती है। इस समय उसे ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन करना होता है। बालक-बालिकाओं को अलग-अलग गुरूकुलों में रहकर शरीर को पुष्ट बनाने के साथ-साथ विद्या प्राप्त करनी होती है! गुरूकुल में 8 वर्ष की आयु में प्रवेश लेकर कम से कम 24 वर्ष की आयु तक सभी बालकों को गुरूकुल में रहना आवश्यक है। बालिकाओं के लिए इस काल में कुछ कटौती की जा सकती है।

विद्याध्ययन समाप्त करके 25 वर्ष की आयु में व्यक्ति विवाह कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है। गृहस्थ आश्रम को आश्रमों का राजा माना जाता है। क्योंकि सभी आश्रमों के व्यक्तियों के पालन-पोषण का दायित्व गृहस्थ आश्रम ही उठाता है। संतति भी इसी आश्रम में उत्पन्न की जाती है। 50 वर्ष की आयु हो जाने पर व्यक्ति इस आश्रम का त्याग कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता है। इस आश्रम में रहकर व्यक्ति पुनः शास्त्राध्ययन करता है। योग साधना द्वारा मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है। समाज सेवा में भाग लेता है। 75 वर्ष की आयु में व्यक्ति संन्यासाश्रम में प्रवेश कर अपना शेष जीवन देश में घूम-घूम कर मानव जीवन के कर्त्तव्यों का उपदेश करता है। चारों आश्रमों की अपनी-अपनी महत्ता है। इस लेख में हम गृहस्थाश्रम को श्रेष्ठ कैसे बनाया जा सकता है, कैसे स्वर्ग का सुख यहीं प्राप्त कर सकते हैं यह वेद के आधार पर बताया जायेगा।

ऋग्वेद में बताया गया है कि मनुष्यों को मर्यादित जीवन जीना चाहिए। मर्यादित जीवन सुखों का देने वाला होता है।

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्।
अयोर्ह स्कम्भ उपमस्यनीडे यथां विसर्गे धरूणेषु तस्थौ।।

ऋ. 10.5.6

अर्थ-(कवयः सप्त मर्यादा ततक्षुः) विद्वानों ने सात मर्यादाएं बताई हैं। मानव को खाने या नाश करने से उन्हें मर्यादा कहा है। (तासाम एकाम् इत्) उनमें से एक को भी जो (अभि गात्) प्राप्त हो वह (अंहुरः) पापी है। (उपमस्य आयोः) समीप स्थित जन को (स्कम्भः) स्तम्भ के समान बांधने वाला (पथां विसर्गे) मार्गों को विभिन्न दिशाओं में जाने के केन्द्र में (स्कम्भः) दीपक के रूप में या (धरूणेषु स्कम्भः) गृह में लगे घरन दण्डों के मध्य स्तम्भ के तुल्य राजा भी (धरणेषु) राष्ट्र के मध्य में केन्द्रस्थ स्कम्भ के तुल्य (तस्थौ) स्थिर होकर शोभित हो। राजा व व्यवस्थापक दोनों का यह कर्त्तव्य है।

भावार्थ-विद्वानों ने जीवन की सात मर्यादाएं निर्धारित की है। वे सात मर्यादाएं हैं-सुरापान, जुआ खेलना, नारी व्यसन, मृगया, कटु वचन, कठोर दण्ड व दूसरों पर मिथ्या कलंक लगाना। इनसे सदैव दूरी बनाये रखनी चाहिए।

आ राहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।
इह त्वष्टा सजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।।

ऋ. 10.18.6

अर्थ-हे लोगों। आप लोग (अनुपूर्व) पहले से हुए वृद्धजनों के अनुकूल (यतमाना) सन्मार्ग में प्रयत्नशील होते हुए (यतिस्थ) जितने भी हो आओ (जरसं वृणानाः) वृद्ध होते हुए (आयुः आरोहत) जीवन नर्सनी पर बैठो। (इह) इस जगत् में (त्वष्टा) सकल जगत् का विधाता प्रभु (स जोषाः) प्रीति युक्त होकर (वः सुजनिमा) आप लोगों की उत्पत्ति और (जीवसे) जीने के लिए (दीर्घम आयुः) दीर्घायु (करति) करे।

परिवार में स्त्रियों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए-

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अन्तश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे।।

ऋ. 10.18.7

अर्थ-(इमा) ये (अविधवाः) पति से युक्त (नारीः) स्त्रियां (सुपत्नी) पति की पतिव्रता होकर (अंग्जनेन सर्पिषा) घृतादि गंध युक्त पदार्थ से शोभित होवें (सं विशन्तु) स्वगृह में प्रवेश करें। वे (अवश्रवः) अश्रु से रहित (अनमीवाः) रोग रहित (सुरत्नाः) सुन्दर रत्न एवं रम्य गुणों वाली (जनयः) सन्तानों को जन्म देने में समर्थ स्त्रियां (अग्रे) आदर सहित पहले। (योनिम् आ रोहन्तु) गृह में प्रवेश करें।

भावार्थ-पतिव्रता नारियां घृतादि गंध युक्त पदार्थ से सुशोभित होकर स्वगृह में प्रवेश करें। वे अश्रुरहित, रोग रहित, सुन्दर रत्न एवं गुणवान संतानों को जन्म देने में समर्थ नारियां आदर से घर में प्रवेश करें।

इस मंत्र में घर में महिलाओं को उचित सम्मान प्रदान करने का वर्णन है। घर में यदि महिला प्रसन्न है तो घर स्वर्ग जैसा ही बन जायेगा।

अब हम यजुर्वेद के माध्यम से इस विषय पर चर्चा करते हैं।

जनयत्यौ त्वा संयौदमग्ने-रिदमग्नीषोमयोरिषे त्वा घर्मोऽसि विश्वायुरूरूप्रथाऽउरू प्रथस्वोरू ते यज्ञपतिः प्रथमा-मग्निष्टे त्वचं मा हिꣳसीद्देवस्त्वा सविता श्रपयत वषिष्ठेऽ-धिनाके।।

यजु. अ. 1 मंत्र 22

अर्थ-हम अपने गृहस्थ को स्वर्ग कैसे बना सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत मंत्र में दिया गया है। पत्नी पति से कहती है-त्वा जनयत्यै संयोमी-एक उत्तम संतान को जन्म देने के लिए मैं आपके साथ मेल करती हूँ 'जनयती' बनने के लिए। वास्तव में गृहस्थ में प्रवेश का मुख्य प्रयोजन उत्तम संतान का निर्माण करना ही है। इस मेल का परिणाम जो (अपत्यम्) सन्तान है (इदम्) यह संतान (अग्ने) अग्नि नामक प्रभु का ही है। (इदम्) यह सन्तान (अग्नि सोमयोः) अग्नि और सोम तत्व का है। इसमें अग्नि तत्व भी है और सोम तत्व भी है। पिता से इसने अग्नि तत्व प्राप्त किया है और माता से सोम तत्व प्राप्त किया है। (इषे त्वा) अन्न प्राप्ति के लिए मैं आपका ध्यान करती हूँ। (धर्मः असि) इस उत्तम अन्न के सेवन से तू प्राण शक्ति को प्राप्त हुआ है। (धर्मः सोम) तू शक्ति का पुञ्ज बना है। (विश्वायुः) तू पूर्ण आयु वाला है। (उरू प्रथा) तू खूब विस्तार वाला बना है। (प्रथ विस्तारे) तेरा विस्तार होवे। (उरू प्रथा) तू खूब विस्तार को प्राप्त हो। (यज्ञ पतिः) सब यज्ञों का रक्षक प्रभु (ते) तेरी सब शक्तियों को (उरू प्रथताम्) विस्तार करे। (अग्निः) वह परमात्मा (ते स्वचम्) तेरे सम्पर्क को (मा) नहीं (हिंसीत) नष्ट करे। (सविता देव) सबका प्रेरक देव (त्वा) तुझे (श्रवयतु) परिपक्व बताये।

भावार्थ-घर को स्वर्ग बनाने के लिए आवश्यक बातें हैं-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

15 अगस्त-स्वतन्त्रता दिवस

स्वतन्त्रता का अर्थ है-अपना राज्य या अपना शासन। जहां पर किसी दूसरे का हस्तक्षेप न हो उसे ही स्वतन्त्र राज्य कहा जाता है। चाहे देश हो, समाज हो या व्यक्ति हो सभी को स्वतन्त्रता प्रिय है। कोई भी व्यक्ति किसी के अधीन होकर नहीं रहना चाहता। इसीलिए किसी कवि ने कहा है-

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
सुधा को तजकर जहर का प्याला,
है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर।।

चाहे कोई कुछ भी कहे परन्तु यह सत्य है कि स्वतन्त्रता की भावना सर्वप्रथम आधुनिक युग के निर्माता क्रान्तिदर्शी महर्षि दयानन्द के मन में ही उठी थी। सन् 1873 ई. में जब महर्षि दयानन्द की भेंट तत्कालीन वायसराय लॉर्ड नार्थ ब्रुक से हुई तो उन्होंने महर्षि दयानन्द जी से पूछा कि क्या आप अपने देश में अंग्रेजी शासन द्वारा उपलब्ध उपकारों का भी वर्णन करेंगे और अपने व्याख्यानों के आरम्भ में ईश्वर से जो प्रार्थना किया करते हैं उसमें भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के निरन्तर स्थिर रहने की भी प्रार्थना किया करेंगे?

इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द ने कहा था कि- मैं ऐसी किसी भी बात को मानने में असमर्थ हूं, क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनैतिक विकास और संसार के राज्यों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। श्रीमान् जी मैं तो नित्य प्रति सर्वशक्तिमान परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि मेरा देश विदेशियों की दासतां से मुक्त हो जाए। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में भी महर्षि ने लिखा है-कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

15 अगस्त 1947 को हमारा देश कई वर्षों की गुलामी के पश्चात आजाद हुआ था तब से हम इस दिन आजादी दिवस के रूप में मनाते हैं। प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त का दिन बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष भी हमारे देश में आजादी दिवस को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस दिन लोग देशभक्ति के गीत गाते हैं, नेताओं के भाषण सुनते हैं, पूरे उत्साह और उमंग के साथ इस दिन को मनाते हैं। परन्तु सोचने का विषय यह है कि क्या यही आजादी का वास्तविक स्वरूप है? क्या यही दिन देखने के लिए हमारे देशभक्त वीरों ने अपना बलिदान दिया था? जब तक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से निर्वहन नहीं करता, भ्रष्ट्राचार से मुक्त नहीं होता, राष्ट्र के प्रति उसके जो कर्त्तव्य है उनका सही तरह से पालन नहीं करता तब तक उसे आजादी दिवस मनाने का कोई अधिकार नहीं है।

जब तक हम अपने देश के प्राचीन गौरव को नहीं प्राप्त कर लेते, जब तक हमारा देश फिर से सोने की चिड़िया नहीं बन जाता, जब तक इस देश से भ्रष्टाचार, नशा, रिश्वतखोरी समाप्त नहीं हो जाती तब तक हम पूर्ण रूप से आजाद नहीं होंगे। एक समय था जब यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था। इस देश की गौरवगाथा चारों दिशाओं में गाई जाती थी। हमारे देश में लोग चरित्र की शिक्षा लेने आते थे। राजा अश्वपति बड़े गर्व के साथ घोषणा करते थे-

नमे स्तेनो जनपदे न कदर्य न मद्यपः।
ना नाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् मेरे देश में कोई चोर नहीं है, कोई शराबी नहीं है, कोई भी व्यक्ति जुआ नहीं खेलता है। ऐसा कोई घर नहीं हैं जहां पर यज्ञ न होता हो। कोई भी मनुष्य अविद्वान् और मूर्ख नहीं है। व्यभिचारी पुरूष ही नहीं है तो स्त्रियां कहां से होंगी। इस प्रकार हमारे देश में बाहर से आकर लोग शान्ति प्राप्त करते थे। हमारे देश में दूध और घी की नदियां बहती थी परन्तु आज इस देश में शराब की नदियां बहती हैं और उसमें हमारे देश की युवा शक्ति बह रही है।

15 अगस्त को राष्ट्रीय पर्व मनाना तभी सार्थक हो सकता है जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक, चाहे वह सांसद हो, विधायक हो, उच्च अधिकारी हो या फिर देश का साधारण नागरिक, सभी यह शपथ लें कि हम भ्रष्टाचार नहीं करेंगे, रिश्वत नहीं लेंगे, राष्ट्र के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे, देश की समस्याओं का सभी मिलकर समाधान करेंगे, देश के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करेंगे, इस देश को नशामुक्त बनाएंगे, लोकतन्त्र की मर्यादाओं का पालन करेंगे। इस प्रकार का संकल्प लेकर अगर हम आजादी दिवस को मनाएंगे तो आजादी दिवस मनाना सार्थक होगा।

देश की वर्तमान अवस्था पर दृष्टि ड़ालने से ज्ञात होता है कि स्वतन्त्रता के पश्चात भारत सांस्कृतिक, चारित्रिक, नैतिक दृष्टि से पतन की ओर अग्रसर है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश की उन्नति, खुशहाली और तरक्की के बारे में हमारे शहीदों ने सपना देखा था वो सपना अधूरा ही रह गया है। आज देश में अनेक प्रकार की बुराईयां फैल रही हैं, बलात्कार की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं, युवा वर्ग नशे में अपने यौवन को बर्बाद कर रहा है। जो देश कभी विश्व गुरू कहलाता था, जिस देश की गौरव गाथा दशों-दिशाओं में गाई जाती थी, जिस देश में लोग चरित्र की शिक्षा लेने के लिए आते थे, जो देश कभी सोने की चिड़िया कहलाता था। आज वही देश अनेक प्रकार की बुराईयों, कुरीतियों पाखण्ड़ों से जकड़ा हुआ है। जिस देश में चरित्र की शिक्षा दी जाती थी, आज वही देश चरित्रहीनता का शिकार हो रहा है। जिस युवा वर्ग को राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान देना चाहिए था, आज वही युवावर्ग नशे की चपेट में आकर अपनी जवानी को बर्बाद कर रहा है। जिस देश की युवाशक्ति चरित्रहीन हो जाती है, उस राष्ट्र का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। जो देश अपनी समृद्ध संस्कृति और सभ्यता के लिए प्रसिद्ध था, आज वही देश दूसरों की संस्कृति और सभ्यता को अपनाकर अपने आपको श्रेष्ठ समझता है। आज का मनुष्य अंग्रेजों की संस्कृति, सभ्यता, उनका रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या आदि अपनाकर अपने आपको आधुनिक समझता है।

अतः आईये 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर हम सब मिलकर अपने देश की उन्नति, तरक्की और खुशहाली की शपथ लें और हम भारत की एकता और अखण्ड़ता को बनाए रखने के लिए तन-मन-धन से जुट जाएं। जो हमारी प्राचीन संस्कृति, और सभ्यता है उसे नष्ट होने से बचाएं और अपने जीवन में नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए आजादी के महत्व को समझें। देश में जो भी कुरीतियां, बुराईयां, अत्याचार हमें प्रतिदिन देखने को मिलता है, उन्हें सभी मिलकर दूर करने का प्रयास करें। अगर हमारी संस्कृति, सभ्यता और नैतिक मूल्यों का पतन होता है तो यह समझो कि हमारी स्वतन्त्रता का पतन हो रहा है। हमारा स्वतन्त्रता दिवस मनाना तभी सार्थक हो सकता है यदि हम पूर्ण रूप से अपने आपको राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

जीवन व्यवस्था और कोरोना संक्रमण

ले.-डॉ. निर्मल कौशिक, 163-आदर्श नगर फरीदकोट

कोरोना जैसी महामारी से पूरा विश्व त्रस्त है। इसके प्रकोप ने बहुत बड़ी वैश्विक शक्तियों को भी हिलाकर रख दिया है। विश्वभर के वैज्ञानिक इसके उपचार का उपाय ढूँढने में लगे हुए है मगर अभी तक हाथ खाली हैं। कोरोना महामारी की दहशत से सभी के सांस अटके हुए हैं। इस अदृश्य दैत्य रूपी विनाशक महामारी ने सैंकड़ों नहीं लाखों लोगों को लील लिया है। जो लोग इसके साए में जीवित भी है वे इतने भयभीत हैं कि अपनों से मिलने से भी घबराते है। दूरदर्शन पर समाचार सुन-सुन कर और स्वास्थ्य प्रबन्धों की स्थिति जानकर तो भविष्य धुँधला ही दिखाई देता है। सरकार और प्रशासन ने तो अपनी सामर्थ्य से कई गुणा अधिक प्रयास किये पुलिस, डाक्टर, नर्स, आशा वर्कर, सफाई कर्मी, समाजसेवी संस्थाओं के स्वयंसेवकों ने दिन रात एक करके जनता की सेवा की। सरकार और स्वास्थ्य विभाग के निर्देशों का पालन कराने में उनके पसीने छूट गये। मगर कुछ मनचले शरारती तत्त्वों ने इसे मज़ाक समझा और उनकी गलतियों से बीमारी फैलती गई। हम देखते है आज की तारीख में भी लोग न तो सामाजिक दूरी का ध्यान रख रहे है और न ही मास्क आदि पहन रहे हैं। साफ सफाई और हाथ धोने से भी परहेज ही करते हैं। पहले-पहले जब सरकार ने कर्फ्यू आदि लगाया, लाकडाउन किया। तो जबरन लोगों को निर्देशों का पालन कराया गया। जब से लाकडाउन-2 में कुछ नियमों में ढील दी गई है और बाजार व कु छ संस्थान खोले गए है सार्वजनिक स्थानों पर सरकारी निर्देशों की धज्जियां उड़ाई गई हैं। यह तो कटु सत्य है कि हम इस बुरे समय का सामना करने के लिए कतई तैयार नहीं थे। अकस्मात् पहाड़ टूट पड़ा। फिर भी आरम्भ में नियन्त्रण रहा। मगर अब तो हद ही हो गई। हम विश्व में तीसरे नम्बर पर है फिर भी हम सचेत नहीं हुए। सचेत हुए होते तो इतने आंकड़े नहीं बढ़ते। हम इस बात से सन्तुष्ट हो जाते है कि हमारे ठीक होने वाले मरीजों का रेट 68 प्रतिशत हैं। मगर मरीजों के बढ़ने का रेट भी तो देखो प्रतिदिन हज़ारों में केस बढ़ रहे हैं। कोई भी वैज्ञानिक अभी तक इसके लिए औषधियां तैयार नहीं कर सका है। आयुर्वेद की जड़ी बूटियां केवल शारीरिक क्षमता बढ़ाती हैं। बीमारी का ईलाज नहीं है। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने से यह कोरोना बीमारी नहीं होगी मगर बीमारी होने पर कोई निराकरण नहीं है। एक समस्या और है किसी मरीज में लक्षण मिलते है किसी में नही मिलते हैं। टैस्टिंग लैब भी विश्वसनीय नहीं रहा। अमृतसर के तुल्ली लैब की घटना हमारे सामने है। कई केसों में पहली रिपोर्ट नैगेटिव और दूसरी पाजिटिव आती है। कई बार पहली पाजिटिव दूसरी नेगेटिव आती है। लोग असमंजस में है।

इस कोरोना संकट ने मानव जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया है। व्यापारी, शिक्षक, डाक्टर, वकील, और अन्य सभी विभागों के कर्मचारी, इन्डस्ट्री आदि सब कुछ पहले जैसा नहीं है। मज़दूरों का रोजगार शिक्षण व्यवस्था, सामान्य व्यक्ति का जीवन सब कुछ बिखर गया है। जीवन नीरस सा हो गया है। पहले तो हम दिन में बच्चों को मोबाईल से हटाने की बात कहते थे। अब पूरा जीवन मोबाईल पर निर्भर हो गया है। शिक्षा भी मोबाईल पर निर्भर हो गई है। अब मां बाप खुद मोबाईल खरीद कर दे रहे है ताकि वे पढ़ सके और उनकी पढ़ाई की हानि न हो। सब कुछ उल्टा होने लगा है। अब हम पाजिटिव को बुरा और नेगेटिव को अच्छा समझने लगे है। पहले हम किसी को नकारात्मक सोच से उबरने के लिए कहते थे (Be Positive) बी पाजिटिव अब कोरोना के सदर्भ में बी पाजिटिव का कहना बुरा लगेगा। सामान्य जीवन की बात करें तो कोरोना ने आपसी सम्बन्धों पर बहुत बड़ा कुठाराघात किया है घर में किसी को बदकिस्मती से कोरोना पाजिटिव आ गया तो ईलाज के बाद भी परिवार वाले उससे दूरी ही बना कर रखते है सच भी तो है। हास्पिटल में ईलाज करने वाले कितने डाक्टर, नर्सें व पुलिस कर्मचारी भी तो इसकी चपेट में आए हैं। इसलिए दूरी तो स्वाभाविक ही है। फिर उसके कपड़े अलग धोना, बर्तन अलग रखना यह सब भी तो सम्बन्धों में दूरी बनाता है। इससे मरीज़ के मन में हीन भावना आती है मनोबल बढ़ाने वाले परिवार के लोग ही ऐसा करेंगे तो मरीज की दशा क्या होगी।

कोरोना ने हमारी जीवनशैली पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। घर के अन्दर खबरें सुन कर डर लगता है तो बाहर निकल कर लोगों से डर लगता है। एक भद्रपुरुष ने तो दूरी बनाए रखने का एक बहुत बढ़िया उपाय बताया था कि घर से बाहर निकलना भी पड़े तो हर व्यक्ति को कोरोना का मरीज़ समझकर उससे दूर रहो। यही मानसिकता बन गई है हमारी। हर व्यक्ति दूसरे से ड़रता है। हमारी स्कूटरों, कारों की हालत खराब हो गई। सब्जियों फलों को कुछ समय रखकर, कितनी बार धो-धो कर उनका ताजापन समाप्त कर फिर इस्तेमाल करते हैं। दुकानदार छोटे व्यापारी रेहड़ी वाले, चाय वाले, मोची, धोबी, मजदूर खोमचे वाले, रिक्शा वाले छोटे-छोटे रोजगार वाले जो अपनों का पेट पालते थे। सब बर्बाद हो गए।

प्रवासी मजदूरों की तो और भी दुर्दशा हो गई। पैदल चलकर हजारों किलोमीटर का सफर करके, (कुछ रास्ते में ही मर गए) अपने घर पहुँचे। वहाँ भी रोजगार का साधन नहीं मिला तो अब वापिस पहले वाले काम पर लौट रहे हैं। पहले भी इसी से संक्रमण फैला था अब दोबारा से फैलेगा और आंकड़े बढ़ेंगे।

कर्मचारियों को 50 प्रतिशत या 2/3 संख्या के साथ डयूटी पर जाना पड़ा। वहां पर पूरा-पूरा स्टाफ संक्रमित हुआ। अब डी.सी., ए.डी.सी., एस डी एम, मन्त्रीगण, सचिव बैंक कर्मी, पुलिस, सब इसकी चपेट में आ गए हैं। अब पुन: कई स्थानों पर लाकडाऊन, कर्फ्यू, धारा 144 को लागू किया जा रहा है। किसी को कुछ समझ में नहीं आता है। बीमारी के बारे में धारणाएं बदलती है, दिशा निर्देश बदलते है मगर स्थिति बद से बदतर होती चली जा रही है। सामाजिक दूरी ने इतनी दूरी बढ़ा दी है। अब बच्चे बड़ों के चरण छूने से ड़रते है और बड़े उनके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देने से भी गुरेज करते है। छोटे बच्चों को चुम्बन करने से रोका जाने लगा है। वैसे भी अब सज धज कर बाहर निकलने का समय तो रहा नहीं। मास्क के नीचे मेकअप और श्रृंगार किसे दिखेगा। काफी लोगों ने अखबार, समाचार भी आनलाईन पढ़ने शुरु कर दिए है। अखबार के कागज से कोरोना के संक्रमण का खतरा है अखबार लेना बन्द कर दिया। कुछ अखबार वालों ने अपने कुछ कर्मचारियों की छंटनी कर दी। कुल मिला कर नौकरी इण्डस्ट्री, व्यापार सब चौपट हो गया।

शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक, छात्र माता पिता सब परेशान है। अस्थिरता का दौर चल रहा है। अध्यापकों से ज्यादा माता पिता परेशान हैं। कुछ के पास बच्चों की पढ़ाई आनलाईन कराने के लिए मोबाइल, नैट, बिजली की व्यवस्था ही नहीं है। इसके बिना माता पिता को बच्चों के साथ बैठना पड़ता है। उनकी सहायता भी करनी पड़ती है। पिछले दिनों खबर आई कि आनलाईन पढ़ाई से बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। पढ़ाई का समय और सिलेबस कम कर दिया गया है। स्वास्थ्य विभाग में डाक्टर और मरीज़ दोनों परेशान है। डाक्टर दिन रात मेहनत कर रहे है। कोरोना के बिना दूसरे मरीज इधर उधर भटक रहे है। कुछ तो अपना सही ईलाज भी नहीं कर पा रहे हैं। कोरोना के डर से लोग अस्पताल जाने से भी अब डरने लगे हैं।

डर के कारण लोग घरों में दुबक गए है। ठीक भी है बाहर तो अब सब जगह खतरा ही है। लेकिन घर में रहकर लोग तनाव का शिकार हो रहे है। कुछ झगड़े पैदा कर रहें। खीझ और क्रोध के कारण स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बाहर निकल कर हम सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने से वंचित हो रहे है। सामाजिक दूरी मन की दूरी का रूप धारण कर रही है। संवादहीनता का माहौल बनता जा रहा है। फोन का इस्तेमाल करके आप औपचारिक रूप से हालचाल पूछ भी लें तो उसमें आत्मभाव का अभाव खटकता है।

मानव जीवन अस्तव्यस्त होता दिखाई दे रहा है। जीवन में मधुरता और सरसता कम हो रही है। भविष्य धुंधला दिखाई देता है। भावी पीढ़ी निराशा के माहौल में जी रही है। समय का उपयोग कैसे करें इसका कोई मार्ग दिखाई नहीं देता है। सभी कार्यक्रम स्थगित हो रहे हैं। घर चार दिवारी में ही सपनों का संसार सिमट कर रह गया है। चारों और प्रश्न ही प्रश्न है उत्तर कहीं नहीं मिलता। क्या हमें ऐसे ही अभावग्रस्त सन्तप्त जीवन ही जीना पड़ेगा। कोई सुधार हो पाएगा या इससे भी निकृष्ट अवस्था में हम पहुंचेंगे कोई नहीं जानता। आओं हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें इस महामारी के संकट से मुक्त करने की कृपा करें। वह सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, न्यायस्वरूप ईश्वर ही हमें मार्ग दिखा सकता है जिससे हम इस विनाशकारी महामारी कोरोना से मुक्त हो सकते हैं। हम प्रकृति से भी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पुण्य के आवरण में पाखण्ड : गीता की सामाजिक दृष्टि

ले.-डॉ. जितेन्द्र कुमार सह-आचार्य, संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय बयाना, भरतपुर (राज.)

(गतांक से आगे)

'**ओम् तत् सत्**' यह तीन प्रकार का ब्रह्म का निर्देश है। जिससे कोई वस्तु बतलाई जाए उसका नाम निर्देश है। अत: यह ब्रह्म का तीन प्रकार का नाम है। ऐसा वेदान्त में ब्रह्मज्ञानियों द्वारा माना गया है। पूर्वकाल में इस तीन प्रकार के नाम से ही ब्राह्मण, वेद और यज्ञ से सब रचे गये हैं। यह ब्रह्म के नाम की स्तुति करते हुए कहा गया है।

इसलिये **वेद का प्रवचन-पाठ करने वाले ब्राह्मणों की शास्त्र-विधि से कही हुई यज्ञ, दान और तप रूप क्रियायें ब्रह्म के 'ओ३म्' इस नाम का उच्चारण करके ही सर्वदा आरम्भ की जाती है।**

'**तत्**' ऐसे इस ब्रह्म के नाम का उच्चारण करके और कर्मों के फल को न चाहकर नाना प्रकार की यज्ञ और तप रूप तथा दान अर्थात् भूमि, सोना आदि का दान करना रूप क्रियायें मोक्ष को चाहने वाले मुमुक्षु पुरुषों द्वारा की जाती हैं।

ओ३म् और तत् शब्द का प्रयोग तो कह दिया अब '**सत्**' शब्द का प्रयोग कहा जाता है।

अविद्यमान वस्तु के सद्भाव में अर्थात् जैसे अविद्यमान पुत्रादि के उत्पन्न होने में, तथा साधु भाव में अर्थात् बुरे आचरणों वाले असाधु पुरुष का जो सदाचार युक्त हो जाना है, उसमें '**सत्**' शब्द कहा जाता है तथा हे पार्थ! विवाह आदि मांगलिक कर्मों में भी 'सत्' शब्द प्रयुक्त होता है अर्थात् (उनमें भी) 'सत्' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जो यज्ञकर्म में स्थिति है, जो तप में स्थिति है और जो दान में स्थिति हैं, वह भी 'सत्' है ऐसा विद्वानों द्वारा कहा जाता है। तथा उन यज्ञादि के लिये जो कर्म हैं अथवा जिसके तीन नामों का प्रकरण चल रहा है, उस ईश्वर के लिये जो कर्म है, वह भी 'सत्' है, यही कहा जाता है। इस प्रकार किये हुए यज्ञ, तप और दान आदि कर्म, यदि असात्त्विक और विगुण हों तो भी श्रद्धापूर्वक परमात्मा के तीनों नामों के प्रयोग से सगुण और सात्त्विक बना लिये जाते है। क्योंकि सभी स्थानों पर श्रद्धा की प्रधानता से ही सब कुछ किया जाता है। इसलिये बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, बिना श्रद्धा के ब्राह्मणों को दिया हुआ दान, तप तथा और भी जो कुछ बिना श्रद्धा के किया हुआ स्तुति-नमस्कारादि कर्म है, वह सब हे पार्थ! मेरी (ईश्वर) प्राप्ति के साधन मार्ग से बाह्य होने के कारण '**असत्**' है, ऐसा कहा जाता है। क्योंकि वह बहुत परिश्रमयुक्त होने पर भी साधु-पुरुषों द्वारा निन्दित होने के कारण न तो मरने के पश्चात् फल देने वाला होता है और न ही इस लोक में सुखदायक होता है।

गीता के सत्रहवें अध्याय का आरम्भ शास्त्र-विधि अर्थात् शास्त्रप्रोक्त कर्म को करने की ही प्रेरणा प्रदान करता हुआ दिखाई देता है। श्रद्धा से परिपूर्ण होकर एवं **अशास्त्रोक्त कर्म जो मात्र वृद्ध व्यवहार को आदर्श मानकर किये जाते हैं, उनको उद्देश्य करके उपदेश किया गया है। आजकल जैसा कि बहुत प्रचलन में है कि ऐसी ही हमारी परम्परा है या हमारे पूर्वज ऐसा करते चले आये हैं अथवा समाज में सभी लोग ऐसा ही तो कर रहे हैं। इत्यादि वाक्य कर्म के कारण रूप में सुनने को प्राप्त होते रहते हैं। आचार्य शंकर ने इन्हीं लोगों को ध्यान में रखकर 'श्रद्धयान्विता:' का अर्थ 'केवल वृद्ध व्यवहार को आदर्श मानकर, जो श्रद्धा पूर्वक यजन करते हैं' ऐसा लिखकर उनको सात्त्विक यज्ञ, सात्त्विक तप और सात्त्विक दान** जो गीता में निर्दिष्ट किये हैं उसी को शास्त्रविधि शब्द से अभिहित किया है। **यहाँ कर्मकाण्ड जन्य किसी विधि की ओर संकेत नहीं है, अपितु राजसी और तामसी वृत्तियों से युक्त होकर किये जाने वाले यज्ञ, दान, और तप एवं समस्त धर्म-कर्म किसी भी प्रकार से लोग इनका त्याग कर दें, इसके लिये ही यज्ञादि के भेदों का प्रतिपादन किया गया है।**

स्वभावजन्य श्रद्धा का अर्थ जन्म-जन्मान्तर के राजसी और तामसी संस्कारों के वशीभूत होकर लोगों के द्वारा जो धर्म-कर्म किये जाते हैं, उनको आचार्य शंकर क्रमश: पाखण्ड तथा आसुरी निश्चय से किये जाने वाले कर्म कहते हैं।

इनका त्याग करने के उद्देश्य से ही विभाग पूर्वक समझाकर सात्त्विकी, राजसी तथा तामसी वृत्तियों के धर्मों का निवारण सहित वर्णन प्रस्तुत किया गया है। जिससे ठीक-ठीक प्रकार से समझकर भ्रान्ति रहित होकर अपने मन का निरीक्षण और परीक्षण करके सात्त्विक धर्म-कर्म का ही सम्पादन किया जा सके तथा राजसी एवं तामसी चित्त की वृत्तियों को समझकर उनको धीरे-धीरे दूर करने में अपने जीवन की सम्पूर्ण शक्तियों का प्रयोग करके कम से कमतर करना और शून्य तक पहुँचाना ही लक्ष्य हो सके। तब शास्त्र-विधि का अर्थ साक्षात् परिणाम प्रदान न केवल इस जीवन को उन्नत, उदात्त और उत्कर्ष तक पहुँचाने में सहायक होगा, अपितु परलोक को भी अच्छा बनायेगा।

अन्तिम दो श्लोकों में श्रद्धा और ईश्वर के निमित्त किये जाने वाले यज्ञ, दान और तप को भी महत्वपूर्ण बताया है। श्रद्धा का अर्थ आचार्य शंकर परमात्मा के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव से ही ग्रहण करते हैं। कोई भी कार्य ईश्वरार्पण करके इसमें मेरा लेश मात्र भी अंश शेष नहीं है, ऐसी सद्भावना पूर्वक और आचार्य शंकर की भाषा में ''इससे मुझे कोई पुरुषार्थ सिद्ध नहीं करना है'' ऐसा समझकर जो यज्ञ, दान और तप करता है, वह यदि असात्त्विक और विगुण हों तो भी सगुण और सात्त्विक बना लिये जाते हैं।

बिना श्रद्धा के यज्ञ, दान और तप तथा अन्य समस्त नमस्कारादि कर्म भी ईश्वर की प्राप्ति के साधन मार्ग से बाह्य होने के कारण सत्कर्म नहीं है, अपितु उन्हें '**असत्**' कहा गया है। इसलिये श्रद्धापूर्वक उक्त कर्म करते रहने चाहिये।

श्रद्धा का शाब्दिक अर्थ भी ('श्रत्' नाम सत्यं तं सत्यं 'धा'-दधाति धारयति पोषयति इति सा श्रद्धा) अर्थात् सत्य को धारण और पोषण करने वाली जो मनोवृत्ति है वह श्रद्धा नाम से कही जाती है और ''**सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म**'' इस उपनिषद् वाक्य से सत्य नाम ईश्वर, ज्ञान और अनन्त का होने के कारण उक्त गीता प्रोक्त, श्रद्धा का अभिप्राय भी सुपुष्ट एवं सुव्यक्त हो जाता है।

अत: गीता के सत्रहवें अध्याय का प्रारम्भ जहाँ शास्त्रविधि की महत्ता से होता है वहीं समापन श्रद्धापूर्वक कर्म के सम्पादन में दिखाई देता है। यह परस्पर विपरीत अथवा विरुद्ध बातें नहीं हैं, अपितु अन्योन्याश्रित सम्बन्ध से एक दूसरे को भावहीन होने से तथा पाखण्ड करने से बचाने का उद्देश्य ही समाहित दिखायी पड़ता है। जहाँ शास्त्रविधि अर्थात् सात्त्विक वृत्ति के अतिरिक्त किये जाने वाले यज्ञ, दान, तप और सभी धर्म-कर्म पाखण्ड की श्रेणी में परिगणित होने लगते हैं, वहीं श्रद्धा से रहित उक्त सभी कर्म साधु पुरुषों के द्वारा निन्दित और '**असत्**' की श्रेणी में गिनाये गये हैं। इसलिये शास्त्रविधि और श्रद्धापूर्वक किये गये यज्ञ, दान, तप एवं समस्त शुभ कार्य ही पुण्य कहलाते हैं तथा इनसे अतिरिक्त अथवा एक के अभाव में किये गये उक्त कर्म पुण्य के दृश्यमान होते हुये भी पाखण्ड एवं असत् ही कहलायेगें, ऐसा गीता का, आचार्य शंकर का और अनेक साधु पुरुषों का सुस्पष्ट अभिमत है। अत: हमें सात्त्विक वृत्ति से तथा श्रद्धापूर्वक पुण्यार्जन करने में ही सावधानी के साथ सतत प्रवृत्त रहना चाहिये। तथा यथा सम्भव राजसी और तामसी वृत्तियों को छोड़ने के लिए शीघ्र, सर्वथा एवं सर्वदा तत्पर रहने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

पृष्ठ 8 का शेष-डा. आसानन्द आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल...

432/450, गगनप्रीत कौर ने 424/450, मनप्रीत कौर ने 422/450, रेणु धंजल ने 418/450, सुरूति ने 415/450, कर्णवीर सिंह ने 414/450, करिश्मा अरोड़ा ने 411/450 अंक हासिल किए। स्कूल प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री वरिंदर सरीन जी, मैनेजर श्री ललित शर्मा जी व डायरेक्टर अचला भल्ला जी ने सभी मेधावी बच्चों, उनके अभिभावकों व स्कूल अध्यापकों को बधाई दी। उन्होंने सभी बच्चों को उनके अच्छे भविष्य की कामना करते हुए कहा कि कोई लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं, हारा वही जो लड़ा नहीं।

दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर का परीक्षा परिणाम शानदार

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित किए गए बाहरवीं कक्षा के परिणाम में दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर का परीक्षा परिणाम शानदार रहा। साईंस विषय में प्रियंका बांसल ने 438/450, गुरप्रीत कौर ने 437/450, सिमरनजीत कौर ने 424/450, तानिया ने 419/450, मनवीर ने 414/450, दिशांत नफरा ने 406/450 अंक हासिल किए। कॉमर्स ग्रुप में संगीता ने 400/450, नैंसी ने 383/450 अंक हासिल किए। सांइस विषय में प्रियंका बांसल ने 97 प्रतिशत अंक हासिल करके जिले में तीसरा स्थान प्राप्त किया। साइंस विषय का नतीजा 100 प्रतिशत रहा। स्कूल प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री जिया लाल शर्मा जी, मैनेजर श्री कुलवन्त राय शर्मा जी व प्रिंसिपल श्री राजिन्द्र सिंह गिल ने सभी मेधावी बच्चों, उनके अभिभावकों व स्कूल अध्यापकों को बधाई दी। उन्होंने सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

-प्रिंसिपल दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

ले.-डा. सुशील वर्मा, गली मास्टर मूलचन्द वर्मा फाजिलका (पंजाब)

यज्ञ परम्परा वैदिक संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यज्ञ को धर्म का प्रथम स्कन्ध माना गया है।

त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञाध्ययनदानमिति प्रथमः

(छान्दोग्योपनिषद् 2/23/1)

वैदिक काल का उत्तरार्द्ध व ब्राह्मणकाल बृहद् यज्ञों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यज्ञ हमारे विज्ञानवेत्ता ऋषियों द्वारा एक कल्याणकारी दैनिक नैमित्तिक कर्त्तव्य है। हमारे ऋषियों द्वारा प्रदत्त यह मानवता के लिए वरदान है। परन्तु अफसोस कि हमने इसे धार्मिक कृत्य मानकर कर्मकाण्ड रूप से सीमित कर दिया। यज्ञ तो एक वैज्ञानिक क्रिया है जिसे हम समझ नहीं पाए। यज्ञ अपने आप में एक सम्पूर्ण विज्ञान है।

पिछले लेख में भी चर्चा की गई थी कि सबसे पहले यज्ञ कुण्ड का आकार पूर्णतया वैज्ञानिक है। इस प्रकार के कुण्ड जैसे स्वामी दयानन्द जी ने प्रचारित किए है, की बनावट इस प्रकार की है कि कम लकड़ी जलाने पर भी अधिक गर्मी पैदा करता है। इसमें समिधाओं का चयन भी इस प्रकार किया जाता है कि वायु का प्रवेश न तो एकदम अधिक हो और न ही बहुत कम। यज्ञ पात्र भी ताम्बे के प्रयोग में लाए जाते हैं क्योंकि ताम्बे में कृमिनाशक गुण है। समिधाएँ भी, मलिन, दूषित व कीड़ा लगी न हो, नमीयुक्त न हो तथा छिलके सहित है। और कटी हुई हो क्योंकि कटे होने के कारण Surface Area बढ़ जाता है। ऋतु अनुसार एवं स्वास्थ्यप्रद समिधाएँ प्रयोग की जानी होती है। हवि द्रव्यों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है ऋषि दयानन्द ने हविषा के लिए चार प्रकार की वस्तुओं का विधान संस्कार विधि में किया है।

प्रथम सुगन्धित-कस्तूरी, केसर, अगर तगर, श्वेत चन्दन, इलायची जायफल आदि।

द्वितीय पुष्टिवर्धक-कृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूँ, जौं आदि

तृतीय-मिष्ट-शक्कर, शहद, छुआरे, किशमिश आदि

चतुर्थ-रोगनाशक-सोमलता, गिलोय आदि औषधियाँ।

सभी प्रयुक्त समिधा, सामग्री, घृत आदि आहुत करने से दहन क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। वैज्ञानिक स्वरूप इस दहन क्रिया में जो प्रस्तुत होता है वही यज्ञ को सर्वकल्याणकारी प्रमाणित करता है। ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि प्रकृति अनादि एवं अनन्त है अर्थात् जिसका आदि न हो तात्पर्य बनाई न जा सके और न ही जिसका अन्त हो अर्थात् नष्ट न किया जा सके। यही विज्ञान का नियम है जिसे हम (Law of Couservation of Class) अर्थात् अविनाश नियम के नाम से जानते हैं इस नियमानुसार 'किसी भी रासायनिक प्रतिक्रिया में भाग लेने वाले पदार्थ के भार का योग अपरिवर्तित रहता है।'' ''Matter Can neither to created not destroyed by any physical or Chemical means thought it may change its form" पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता, सिर्फ उस की अवस्था में ही परिवर्तन होता है जैसे पानी पानी ही रहेगा, हाँ बर्फ अथवा भाप अवस्था परिवर्त्तित है। इसी प्रकार अग्निहोत्र में आहुत किए गए पदार्थ मात्र रूप बदलते है, नष्ट तभी होते है। जब अग्नि में कोई वस्तु डाली जाती है तो अग्नि उसके स्थूल रूप को तोड़कर सूक्ष्म बना देती है। यजुर्वेद में इसे 'धूरसि' कहा गया है। स्वामी जी लिखते हैं ''भौतिक अग्नि (धूः) सब पदार्थों के छेदन और अन्धकार का नाश करने वाला (असि) है।'' अग्नि में डालने से पदार्थ हल्का होकर सारे वातावरण (वायु) में फैल जाता है। इसे वैज्ञानिक सिद्धान्त (Grahm's law of Ditlusion) कहा गया है जिसका साधारण अर्थ है जो गैस जितनी हल्की होगी वह उतनी ही शीघ्र वायु में मिल जाएगी।

यही यजुर्वेद में वर्णित है

''स्वाहाकृतेऽर्ध्वनयसं मारुतं गच्छतम्'' (यजु 6/16)

अग्निहोत्र में प्रयुक्त पदार्थों के जलने पर प्रक्रियाओं के विषय में चर्चा करते हैं।

सर्वप्रथम कपूर जलाया जाता है जिससे अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है यह पदार्थ जलते समय धुआँ उत्पन्न करता है। कुछ भाग बिना रासायनिक परिवर्तन के उड़ जाता है जो कि सुगन्धि पैदा करता है। शेषभाग क्रिया होने पर तेल बन जाता है जिससे पाइनीन, सीनिओल, युजिनाल, टर्पिनआल आदि होते हैं।

तत्पश्चात् समिधा जिसका 75 प्रतिशत भाग लकड़ी है जिसमें Cellulose सेल्युलोस और लिग्नोसेलुलोस है। 48 प्रतिशत इसमें हाइड्रोजन, 28 प्रतिशत कार्बन और लगभग 24 प्रतिशत आक्सीजन होती है। उक्त दोनों पदार्थ आक्सीजन के साथ मिलकर कार्बनडाईक्साइड (Co_2) और पानी (H_20) बनाते हैं। पानी वाष्प रूप में उड़ जाता है और Co_2 वायु में मिल जाती है। यदि वायु का प्रवेश कम हो तो Co (कार्बन मोनोक्साइड) गैस बनती है जो हानिकारक है। इसीलिए यज्ञ खुले स्थान में किया जाता है ताकि वायु पूर्णरूपेण प्रवेश हो।

लकड़ी के जलने पर राख की मात्रा 0.2 प्रतिशत से 4 प्रतिशत तक होती है। राख में मुख्यतः कैल्शियम, पोटोशियम, मैग्नीशियम और थोड़ी मात्रा में एल्युमीनियम लोहा, मैंगानीज, सोड़ियम फास्फोरस एवं गन्धक भी होती है। पोटोशियम के कारण राख खाद के रूप में प्रयोग की जा सकती है।

इसके बाद घृत जो जलने से सुगन्ध पैदा करता है, उसका कारण है कैप्रोनिक एल्ड़ीहाईड, ओक्टोलिक एल्ड्रीहाईड, अन्य एल्डीहाईड व वाष्पशील Fatty acids घृत के जो कण बिना जले ही वायु में मिल जाते हैं वे अतिसूक्ष्म होते हैं और ये कण वर्षा के लिए धूलिकणों का कार्य करते हैं। घृत से जो अन्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं उनमें हाइड्रोकार्बन मुख्य होते है। यह हाइड्रोकार्बन आक्सीजन से मिलकर मिथाइल अल्कोहल तथा फार्मेल्डीहाइड आदि बनाते हैं।

जब अग्नि पूरी तरह से प्रज्ज्वलित हो जाए तो सामग्री की आहुतियाँ दी जाती है। जटामांसी, सफेद चन्दन का बूरा और अगर तगर आदि लकड़ी की भान्ति स्वयं जलकर शेष क्रियाओं के पूर्ण होने के लिए गर्मी भी उत्पन्न करती है। जिसे हम Exethermic Reaction कहते हैं।

यज्ञ सामग्री में कार्बोहाईड्रेट भी होते हैं विशेषतः शर्करा एवं स्टार्च। शर्करा में चीनी मुख्य है और यह शहद, दुग्ध, तगर, गेहूँ, किशमिश, छुआरे आदि में पर्याप्त हैं। चावल, गेहूँ, जौं, उड़द आदि में स्टार्च की भरपूर मात्रा। वैज्ञानिकों का कहना है कि खांड के तेजी से जलने से फार्मेल्डीहाइड (Formaldehyde) की उत्पत्ति होती है। यह गैस कृमिनाशक है इसलिए वायु को मनुष्योपयोगी बना देती है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि चन्दन का बूरा जो प्रयोग किया जाता है उसमें निकला तेल (आक्सीकरण होने पर) कीड़ों को भगाने तथा मारने वाला है।

यज्ञ में सूर्य की किरणों का भी बहुत महत्त्व है। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है ''सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है।'' सूर्य के प्रकाश का महत्त्व इसलिए है कि यज्ञ के समय उत्पन्न हुए पदार्थों में सूर्य के प्रकाश की विद्यमानता में कई रासायनिक परिवर्त्तन होते हैं। कुछ एल्ड़ीहाइड एवं एल्कोहल आक्सीकृत हो जाते हैं। Ultra violet rays में कुछ Co_2 (Carlion dioxide) पानी के साथ मिलकर Formaldehyde बनाती है।

इसके अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य संशलेषण का है। क्योंकि पौधों में क्लोरोफिल होती है और पौधे धूप की विद्यमानता में क्लोरोफिल की सहायता से कार्बनडाइक्साइड (Co_2) को कार्बोहाइड्रेट में बदल देते हैं जिसे प्रकाश संशलेषण (Photosynthesis) कहते हैं और यह धूप में ही सम्भव है। इस प्रकार यज्ञ से निकली Carbondioxide पौधों के लिए लाभदायक है और पौधे हमें आक्सीजन देते हैं। इस प्रकार यज्ञ की Co_2 हानि नहीं पहुँचाती परन्तु पौधों को देकर हमें जीवन दायिनी आक्सीजन प्राप्त होती रहती है। उदय और अस्त होने वाले सूर्य की किरणें तो और भी अधिक गुणकारी है।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीहन्तु निम्रोचहन्तु रश्मिभिः।
ये अन्तः क्रिमयो गवि।।
अथर्व. 2/32/1

अर्थात् उदय होता हुआ और अस्त होने वाला सूर्य अपनी किरणों से भूमि और शरीर में रहने वाले रोगजनक कीटों का नाश करता है।

यज्ञ से कई बीमारियों का उपचार होता है। इस विषय में चर्चा फिर कभी। सूर्य की किरणें और यज्ञाग्नि दोनों ही कृमिनाशक है। चेचक के टीके के अविष्कारक तथा फ्रांस के वैज्ञानिक डॉ. हैफकिन का विचार है ''कि घृत जलाने से कृमि मर जाते हैं।'' आयुर्वेद में गोघृत को उत्तम माना गया है। यज्ञ के धुँए में ऐसीटिक ऐसिड होता है जो कि पौधों के लिए हितकर है और कृमि Bacillus Collie को समाप्त कर देता है। इसी प्रकार गिलोए, नीम के पत्ते और घृत के जलाने से जो धूम बनता है वह मलेरिया बुखार में बहुत लाभदायक है। यज्ञ की राख भी कई चमड़ी रोगों के लिए लाभप्रद है।

अग्निहोत्र मेघ बनाने में भी सहायक होता है और उन्हें बरसने में भी सहयोग करता है। क्योंकि मेघों को बरसने के लिए वायु की नमी की बहुलता का होना अनिवार्य है। हवा जितनी अधिक गर्म होगी उतना ही अधिक जलधारण कर सकेगी।

शतपथ ब्राह्मण का कथन है

''अग्नेर्वैधूमो जायते धूमाद्भ्रमभ्राद्र वृष्टिः। 5/3/5/17

अर्थात् अग्नि से धूम, धूम से बादल, और मेघ से वृष्टि होती है।

गीता भी यही कहती है)

अन्नाद् भवन्ति भूतानि

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-गृहस्थ जीवन को स्वर्ग बनाओ वेद

1. गृहस्थ को संतान निर्माण का आश्रम समझा जाए।

2. संतान को हम प्रभु की धरोहर समझें।

3. संतानों में शक्ति और शान्ति के विकास का प्रयत्न करें।

4. घर में धन-धान्य की न्यूनता न रहे।

5. अपनी शक्ति को क्षीण न होने दें।

6. शरीर, मन और मस्तिष्क का ठीक से विस्तार करें।

7. यज्ञों को हम शक्ति विस्तार का साधन समझें।

8. प्रभु की उपासना से हम कभी मुख न मोडें।

9. ऐसा जीवन जीवें कि प्रभु की कृपा हम पर सदैव बनी रहे।

वास्तव में गृह को स्वर्ग बनाना तो पति-पत्नी के आपसी व्यवहार पर निर्भर है।

संवसाथाꣳस्वर्विदा समीची उरसात्मना।

व्यचस्वती संवसाथां मतमग्निं पुरीष्यम्।।

यजु. 10.31

अर्थ-(संवसाथाम्) पति-पत्नी घर में सम्यक् निवास वाले होते हैं। (स्वर्विदा) ये स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। (समीची) में सदैव मिल जुल कर कर्म करने वाले होते हैं। (त्मना) स्वयं (उरसा) अपने बल से गृहस्थ रूपी गाड़ी को खींचते हैं। (अन्तः) अपने अन्दर (अग्निम्) प्रभु की भावना को (भरिष्यन्ति) भरने वाले होते हैं। (इतः) निश्चय से (अजस्रम्) निरन्तर बिना विच्छेद के (ज्योतिष्मन्वतम्) ज्योतिष वाले बनते हैं।

अपने द्वारा उपार्जित धन को परोपकारी कार्यों में लगाना भी मनुष्य को प्रसन्नता देता है।

शतं हस्त समाहर सहस्त्र हस्तं संकिर।

कृतस्य कार्यऽस्य चेह स्फातिं समावह।। अथर्व. 3.24.5

अर्थ-हे (शत हस्त) सैकड़ों हाथों से युक्त प्रभो। आप सैकड़ों हाथों से (समाहर) हमारे लिए धन-धान्य प्राप्त कराइये। हे (सहस्त्र हस्त) हजारों हाथों वाले प्रभो। (संकिर) हमारे लिए धनों को प्रेरित कीजिए (च) और (इह) इस जीवन में (कृतस्य कार्यस्य) कर्त्तव्य भूत कार्यों की (स्फातिम्) समृद्धि को (समावह) दीजिए।

भावार्थ-प्रभु हमें पर्याप्त धन देवें और हम उसे अपने कर्त्तव्य के पालन में व्यय करें।

फिर अथर्ववेद काण्ड 3 सूक्त 30 में 7 मंत्र हैं। ये मंत्र परिवार में आपसी प्रेम बढ़ाने के साथ ही शान्ति स्थापित करने वाले हैं।

स हृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।

अथर्व. 3.30.1

अर्थ-मैं (वः) तुम्हारे लिए (सहृदयम्) प्रेम पूर्ण हृदय (सांमनस्यम्) शुभ विचारों से परिपूर्ण मन और (अविद्वेषम्) निर्वैरता (कृणोमि) करता हूँ। तुममें से प्रत्येक (अन्यः अन्यम्) एक दूसरे को (अभिहर्यत) प्रीति करने वाला हो (इव) जैसे (अघ्न्या) गाय (जातम् वत्सम्) उत्पन्न हुए बछड़े को प्रेम करती है।

भावार्थ-परिवार के सभी सदस्य सहृदय, शुभ विचारों से परिपूर्ण और एक दूसरे से निर्वैरता रखने वाले होवें। एक दूसरे को ऐसे प्रेम करे जैसे गाय अपने नवजात बछड़े को प्रेम करती है।

अनुव्रतपितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमना।

जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

अथर्व. 3.30.2

अर्थ-(पुत्रः) पुत्र (पितुः) पिता के (अनुव्रत) अनुकूल कर्म करने वाला होवे। (मात्रा संमनाः भवतु) माता के साथ समान विचार वाला होवे। (जाया) पत्नी (पत्ये) पति के लिए (मधुमतीम्) माधुर्य से भरी हुई (वाचं वदतु) वाणी से बोले (शन्तिवाम्) पति भी पत्नी से मधुर वाणी में बोले।

समानी प्रपा सहवोऽन्न भागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि।

सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा-नाभिमिवा भितः।।

अथर्व. 3.30.6

अर्थ-(प्रपा समानी) तुम्हारा जल पीने का स्थान एक होवे। (वः अन्न भागः सह) तुम्हारा अन्न का भाग भी साथ-साथ होवे। (समाने योक्त्रे) एक ही जोत में (वः सह युनज्मि) मैं तुम्हें साथ-साथ जोड़ता हूँ। (सम्यञ्चः) मिल कर (अग्निम् सपर्यत) यज्ञ द्वारा प्रभु का पूजन करो। (नाभिम् अभितः अरा इव) जैसे नाभि में चारों ओर चक्र के अरे जुड़े होते हैं।

वेदों में इस प्रकार के कई मंत्र हैं जिनके आधार पर चल कर गृहस्थ को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

पृष्ठ 4 का शेष-जीवन व्यवस्था और कोरोना संक्रमण

क्षमायाचना करते है कि हमने अपने स्वार्थ के वशीभूत जिस प्रकार उसका विनाश किया। भविष्य में हम अपनी भूल सुधारने का प्रयास करेंगे। प्रकृति का प्रत्येक स्वरूप पेड़, पौधे, पर्वत, नदियाँ, हमारे लिए आदरणीय और वन्दनीय है। हमारे सन्तों, ऋषियों वेदों और ग्रन्थों ने प्रत्येक कण-कण में ईश्वर के विद्यमान होने का ज्ञान दिया है। आओ हम सब सृष्टि की हर रचना का सम्मान करना सीखें। सन्तुलित और सात्विक जीवन जीने का प्रयास करें तभी हमारे जीवन की व्यवस्था सही दिशा में आगे बढ़ सकेगी और हम कोरोना जैसी भयानक महामारी से मुक्त जीवन जी सकेंगे।

पृष्ठ 6 का शेष-यज्ञ का वैज्ञानिकस्वरूप

पर्जन्यादन्नसम्भवः।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यों यज्ञः कर्म समुदभवः।। गीता 3/1/4

इस तरह अग्निहोत्र से ईश्वराज्ञा का पालन, पवन और वर्षा जल की शुद्धि, सब पदार्थों की अत्यन्त उत्तमता और जीवों में सुख होता है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मन्त्रों का भी अग्निहोत्र के सम्पन्न करने में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है) मन्त्रोच्चारण से एक तो वेद की रक्षा होती है, दूसरे इनके उच्चारण से एक कम्पन पैदा होता है जो कि मानव के लिए, पौधें एवं पशु आदि के लिए भी एक सकारात्मक वातावरण में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त अग्निहोत्र प्रक्रिया में भी बहुत सहायक होते है। एक के बाद एक आहुति डालते जाओ तो वह लाभप्रद नहीं होगी जितनी की एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया में अन्तर होने से। यह तभी सम्भव है यदि एक मन्त्र बोलने के बाद दूसरे मन्त्र बोलने का समय में अन्तर हो। अग्निहोत्र में घृत एवं सामग्री यदि एक बार में ही ड़ाल दी जाए तो वे जल तो जाएँगी परन्तु क्रियाएँ पूर्ण नहीं होगी जल कर सब भस्म हो जाएगा परन्तु न तो गैसें बनेगी और न ही उनकी प्रक्रिया परन्तु अन्तराल में यही कुछ हो तो स्वाभाविक क्रियाएँ सम्पन्न हो पाएगीं और यह सम्भव है केवल मात्र मन्त्रोच्चारण के साथ आहुतियाँ देना।

यह है यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप जिससे वातावरण की शुद्धि, कृमियों का नाश, पेड़ पौधों की वृद्धि, शुद्ध वर्षा जल की प्राप्ति, अन्न की प्राप्ति, रोगों से मुक्ति। भौतिकता के साथ साथ आध्यात्मिक की वृद्धि। चर अचर प्राणियों का उत्कृष्ट जीवन जड़ एवं चेतन सभी के लिए लाभप्रद। इसीलिए कहा है

''यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म'' और ''यज्ञो वै विष्णुः''

पृष्ठ 8 का शेष-श्री लाल बहादुर शास्त्री...

इस दिन वैदिक संस्कृति के परम उद्धारक परम योगीराज और द्वापर युग के निःस्पृह राजनीतिज्ञ श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। इन दो पुण्य तिथियों के मध्य हमारा वेद प्रचार सप्ताह मनाया जाता है जो स्वाध्याय और चिन्तन का प्रतीक है। वैदिक धर्म में स्वाध्याय को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वैदिक संस्कृति में मनुष्य जीवन को चार भागों में बांटा गया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। स्वाध्याय को हमारी संस्कृति में इतना महत्व दिया गया है कि यह प्रत्येक वर्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और आवश्यक है। आश्रमों में प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य आश्रम केवल गुरूओं के सान्निध्य में रहकर स्वाध्याय के लिए है।

उन्होंने महामारी से लड़ रहे सभी कोरोना योद्धाओं डाक्टरों, नर्सों, सफाई सेवकों, पुलिस कर्मियों के स्वस्थ रहने की कामना की। उन्होंने कहा कि रक्षा बन्धन खुशियों से संयुक्त होकर सब के जीवन में सदैव बना रहे। डा. नीलम शर्मा ने अपने आशा और विश्वास भरे संदेश में कहा कि कोरोना महामारी से शीघ्र ही विश्व को मुक्ति मिलेगी। इस अवसर पर आर्य समाज के पुरोहित श्रीराम ने स्वाध्याय पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अध्ययन, चिन्तन, मनन सभी को करना चाहिये। यह श्रावणी पर्व इसी का संदेश देता है। क्योंकि वर्षा ऋतु में हमारे ऋषिगण भी पर्वतों से उतर कर गांवों में आकर लोगों से मिलते थे और प्रवचनों द्वारा उन्हें वेदों एवं अध्यात्म के साथ जोड़ते थे।

इस श्रावणी पर्व पर महामारी सम्बन्धी सरकार के निर्देशों का पूरा पालन किया गया। बहुत थोड़ी संख्या में उपस्थित स्टाफ ने मास्क लगा कर और सामाजिक दूरी का पालन करते हुये इस पर्व में भाग लिया। मैडम अनीता सिंघल, मैडल शारदा अत्री, डा. सुशील बाला, मैडम अंजना, मैडम जसविन्द्र, श्री विशाल, मैडल जसवीर, मैडल दीक्षा, मैडम किरण सीकरी, मैडम रिंकू, मैडम मधु, मैडम वीरपाल भी उपस्थित हुये।

-श्रीराम पुरोहित आर्य समाज

श्रीलाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला में श्रावणी उपाकर्म मनाया

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला में श्रावणी उपाकर्म धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रिंसीपल डा. नीलम शर्मा जी हवन यज्ञ करते हुये। जबकि चित्र दो में कालेज स्टाफ दिखाई दे रहा है।

दिनांक 3 अगस्त 2020 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला के प्रांगण में आर्य समाज का महत्वपूर्ण पर्व श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन के माध्यम से पवित्र वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ उस परमपिता परमात्मा से वैश्विक महामारी कोविड-19 से विश्व मुक्ति की भी प्रार्थना की गई।

इस अवसर पर कालेज प्रबन्धक समिति के सदस्य श्री प्रदीप गोयल एवं श्री सुखमहिन्द्र सिंह जी विशेष रूप से उपस्थित हुये। कालेज प्राचार्य डा. नीलम शर्मा जी ने अपने सम्बोधन में इन विशेष अतिथियों का स्वागत किया और इस पर्व में विशेष रूप से सम्मिलित होने के लिये उनका हार्दिक धन्यवाद भी किया गया। कालेज प्राचार्य डा. नीलम शर्मा जी ने सभी को श्रावणी पर्व एवं रक्षा बनधन की बधाई देते हुये श्रावणी पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला और सब को ज्ञानवान् बनने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनजीवन में तथा वैदिक संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्व है। श्रावणी का पर्व ज्ञानार्जन का पर्व है। प्राचीन काल में अध्येता इस पर्व पर प्रचुर ज्ञानार्जन अपने आपको तैयार करते थे क्योंकि ज्ञानार्जन की कोई सीमा नहीं होती है। सतत् और शाश्वत अध्ययन ही जीवन की गरिमा है। अत: श्रावणी के पावन पर्व से ही आर्य जगत् का वेद प्रचार सप्ताह आरम्भ होता है जो भाद्र कृष्ण की अष्टमी तिथि तक चलता है।

उन्होंने कहा कि भाद्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी भी भारतीय जीवन में अतिशय पुण्य की तिथि है क्योंकि (शेष पृष्ठ सात पर)

डा. आसानन्द आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल नवांशहर का नतीजा शत प्रतिशत

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित किए गए बाहरवीं कक्षा के परिणाम में डा. आसानन्द आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल नवांशहर का नतीजा बेहद शानदार रहा। आर्ट्स में मैरिट सूची में आए बच्चों के चित्र।

कामर्स में मैरिट सूची में आए बच्चों के चित्र।

साईन्स में मैरिट सूची में आए बच्चों के चित्र।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित किए गए बाहरवीं कक्षा के परिणाम में डा. आसानन्द आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल नवांशहर का नतीजा बेहद शानदार रहा। सांइ, कामर्स व आर्टस के सभी 243 बच्चों ने परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमें 21 बच्चों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करके स्कूल व संस्थान का नाम रोशन किया। सांईस विषय में परम ने 436/450, तेजविंदर कौर ने 435/450, पल्लवी लड़ोईया ने 434/450, अष्मीता बब्बर ने 433/450, कीर्ति ने 432/450, संजना राणा व अंजलि ने 431/450 तथा सोमल काहलों ने 430/450 अंक हासिल किए। कामर्स ग्रुप में हरमनजोत ने 431/450, दीया ने 425/450, रीया ने 424/450, गुरूमुख सिंह ने 419/450, कर्ण भारद्वाज ने 417/450, रूपिन्दर कुमार गुप्ता ने 413/450, सिमरणजीत कौन ने 411/450 हासिल किए। आर्टस ग्रुप में अमीषा गोयल ने (शेष पृष्ठ पाँच पर)

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**